अध्याय – 5
क्षेत्रीय सर्वेक्षण/क्षेत्रीय अध्ययन
(Field Survey/Field Study)

क्षेत्रीय अध्ययन का आशय व आवश्यकता

भूगोल एक क्षेत्रीय विज्ञान (Spatial Science) अथवा प्रादेशिक विज्ञान (Regional Science) और/अथवा क्षेत्रीय विज्ञान (Field Science) है। सभी भौगोलिक लक्षण भूपटल पर असमान रूप से वितरित हैं। भूपटल पर पाए जाने वाली इस विषमता के कारण ही भौगोलिक लक्षणों जैसे उच्चावच, जलवायु, मृदा, वनस्पति, कृषि, उद्योग और जीवन शैलियों में व्यापक भिन्नताएँ पाई जाती है। भौगोलिक प्रक्रियाओं और शक्तियों को किसी बन्द प्रयोगशाला में कृत्रिम यंत्र द्वारा कार्यरत नहीं देखा जा सकता है। अपने भौगोलिक पर्यावरण और उसकी प्रक्रियाओं को समझने के लिए आवश्यक है कि भूगोल का विद्यार्थी भौगोलिक अवयवों के बीच होने वाले अन्योन्य क्रियाओं को अपनी वैज्ञानिक आँखों से देखे और समझे। **भूगोलवेत्ताओं के पास इन अन्योन्य क्रियाओं का एक विस्तृत क्षेत्र है – यही उसकी प्रयोगशाला है।** भौगोलिक अवयव सिर्फ भौतिक ही नहीं मानव जीवन के आर्थिक और सांस्कृतिक पक्ष को भी उल्लेखनीय ढंग से प्रभावित करते हैं। किसी भी क्षेत्र में जाकर इन सभी पहलुओं से सम्बन्धित आँकड़ों, सूचनाओं तथा जानकारियों को एकत्रित करना, क्षेत्रीय समस्याओं को समझना एवं विश्लेषण करना ही **क्षेत्रीय अध्ययन** है।

किसी भी समाज का आर्थिक और सांस्कृतिक विकास भौगोलिक पर्यावरण से सीधा प्रभावित/नियंत्रित होता है। भूगोलवेत्ता किसी क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं का विश्लेषण करके ही क्षेत्रीय समस्याओं के मूल तक पहुँचते है और यथोचित समाधान सुझाते हैं। उपरोक्त तथ्यों से सैद्धान्तिक सहमति के बावजूद कुछ छात्र ही नहीं, अध्यापक और शैक्षिक प्रशासक भी भूगोल में क्षेत्रीय अध्ययन के केन्द्रीय महत्व को नजरअंदाज करते हैं। यह रेखांकित किया जाना अनुचित नहीं होगा कि **क्षेत्रीय अध्ययन के अभाव में छात्र का भूगोल का ज्ञान मात्र किताबी ज्ञान रह जाएगा और छात्र को प्रकृति और समाज के साथ एक सकारात्मक प्रवृत्ति बनाने के मार्ग में बाधा आएगी।**

क्षेत्रीय सर्वेक्षण के दृष्टिकोण एवं मूल आधार

क्षेत्रीय अध्ययन के सामान्यतया दो दृष्टिकोण होते हैं :

(i) क्षेत्र विशिष्ट अध्ययन (Area-Specific Study) एवं

(ii) समस्या–विशिष्ट अध्ययन (Problem-Specific Study)

(i) **क्षेत्र विशिष्ट अध्ययन** के अन्तर्गत एक विशिष्ट क्षेत्र के भौगोलिक तत्वों का समग्र रूप से अध्ययन कर क्षेत्रीय विकास की योजना प्रस्तुत की जाती है या उसके लिये सुझाव दिये जाते हैं।

(ii) **समस्या विशिष्ट अध्ययन** में किसी एक विशिष्ट समस्या जैसे कृषि, आवास, प्रदूषण, उद्योग, परिवहन, विपणन, सिंचाई, पेय–जल, आदि का चयन कर उसका भौगोलिक परिवेश में न केवल अध्ययन किया जाता है अपितु उसके निदान के उपाय भी प्रस्तुत किये जाते हैं।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण भौगोलिक अध्ययन का मूलाधार है। इसके माध्यम से न केवल क्षेत्र की भौगोलिक दशाओं का ज्ञान होता है अपितु इसके द्वारा भौतिक पर्यावरण एवं मानव के अन्तर्सम्बन्धों को समझा जा सकता है। इससे स्थानीय भौगोलिक दशाओं का ज्ञान होता हैं। क्षेत्रीय भौगोलिक अध्ययन के द्वारा निम्न मूल प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया जाता है, वे हैं : क्या (What), कहाँ (Where), कब (When), क्यों (Why) और कैसे (How)। ये प्रश्न प्रत्येक क्षेत्रीय अध्ययन में ज्ञात किये जाते हैं।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण के स्वरूप का मूल आधार निम्न चार्ट से स्पष्ट है–

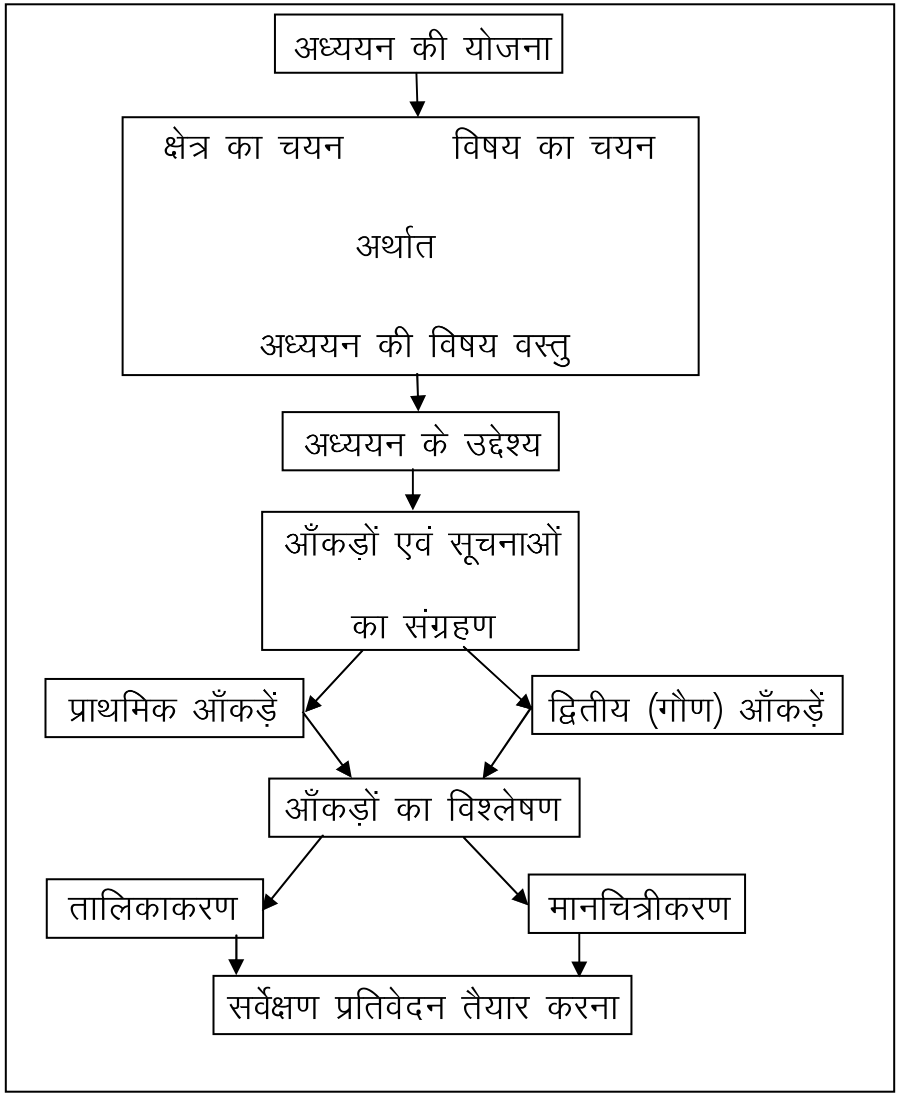

अध्ययन क्षेत्र का चयन

भूगोलवेत्ताओं के अध्ययन का क्षितिज खुला है और यही खुला क्षेत्र उसकी प्रयोगशाला कही जाती है। क्षेत्रीय अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी को भूगोलवेत्ताओं की इस प्रयोगशाला से परिचय कराना ही इस अध्ययन का उद्देश्य है। अतः **प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण** (observation) द्वारा इन क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन करना भूगोल के विद्यार्थी के लिये उपयोगी ही नहीं, आवश्यक भी है। भूगोलवेत्ता क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन तथा विश्लेषण करके क्षेत्रीय समस्याओं का पता लगाते हैं। इन समस्याओं के निराकरण हेतु भी भूगोलवेत्ता प्रयत्नशील रहते हैं।

क्षेत्रीय अध्ययन शिविर के सफल आयोजन के लिये आवश्यक है कि **दल किसी ऐसे स्थान का चयन करे जिसका भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्य दल के निवास क्षेत्र से भिन्न हो।** यदि साधन, समय और सुविधाएँ उपलब्ध हो तो किसी दूरस्थ क्षेत्र का चयन करना अधिक लाभप्रद होता है। साधनों एवं समय की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय अध्ययन हेतु दूरस्थ–सम्भव स्थान का चयन करना चाहिये। पहली, अध्ययन हेतु सूचनाओं और आँकड़ों के एकत्रण हेतु सम्पर्क सूत्र सुविधाएँ और दूसरी, दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यवस्थाएँ। एक **सुनियोजित क्षेत्रीय अध्ययन शिविर का आयोजन एक कला है।** एक बड़े समूह का एक इकाई के रूप में किसी अपरिचित स्थान पर जाकर रहना, जानकारियाँ व आँकड़ें एकत्रित करना, सर्वेक्षित समुदाय से एक स्वस्थ, संवेदनशील सम्बन्ध बनाना और मानवीय एवं भौगोलिक तत्वों के अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण करना अपने आप में एक अनूठा अनुभव होता है।

क्षेत्र गमन एवं क्षेत्रीय अध्ययन की तकनीकें

किसी भी स्थान का क्षेत्रीय सर्वेक्षण विधिवत प्रारम्भ करने से पूर्व कुछ प्राथमिक कार्यवाहियाँ कर लेनी चाहिए। चयनित स्थान पर सूचनाओं व आँकड़ों के एकत्रण की सुविधा, उस स्थान की विशेषताओं व समस्याओं की प्राथमिक जानकारी प्राप्त पहले ही कर लेने से क्षेत्रीय अध्ययन का कार्य सुगम हो जाता है।

क्षेत्रीय अध्ययन की सफलता के लिये पूर्व नियोजन और पूर्वानुमान आवश्यक है, नियोजन में सुविधा की दृष्टि से क्षेत्रीय अध्ययन के इस कार्य को चार चरणों में विभाजित कर सकते हैं।

1. **प्रथम चरण**

   (i) सबसे पहले हमें क्षेत्रीय अध्ययन हेतु किसी उपयुक्त स्थान का चयन करना चाहिए।

(ii) उसके पश्चात् उक्त क्षेत्रीय अध्ययन के लिए प्रशासनिक अनुमति प्राप्त करनी चाहिए।

(iii) क्षेत्रीय अध्ययन हेतु आवश्यक धनराशि की व्यवस्था करना भी प्राथमिक चरण का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

(iv) धनराशि की व्यवस्था हो जाने के बाद सर्वेक्षण स्थल तक आने–जाने तक की जानकारी प्राप्त करके आवागमन की उपयुक्त व्यवस्था करनी चाहिये। यदि आवश्यक हो तो आने जाने हेतु पहले से ही आरक्षण की व्यवस्था कर लेना सुविधाजनक रहता है।

(v) चूँकि चयनित क्षेत्र आपके लिये नया हो सकता है, अतः वहाँ किसी प्रकार की अप्रत्याशित परिस्थिति में आपके सहयोग के लिये कुछ जिम्मेदार व्यक्तियों जैस – पटवारी, सरपंच, अध्यापक अथवा उच्च प्रशासनिक अधिकारियों से सम्पर्क करना चाहिये।

(vi) क्षेत्रीय अध्ययन के लिये जाने वाले छात्र–छात्राओं की संख्या को ध्यान में रखते हुए चयनित स्थान पर पहुँचने से पहले ही ठहरने की उपयुक्त व्यवस्था भी कर लेनी चाहिए।

(vii) छात्र–छात्राओं की संख्या के अनुरूप चयनित स्थान पर उपयुक्त भोजन की व्यवस्था भी पहले से ही तय कर लेना उपयुक्त रहता है।

2. **द्वितीय चरण**

(i) क्षेत्रीय अध्ययन हेतु सभी छात्र–छात्राओं को अपने–अपने कर्त्तव्यों की जानकारी कर लेनी चाहिए। समूह में संगठित तथा समन्वित रूप से कार्य करना आवश्यक होता है।

(ii) क्षेत्रीय अध्ययन के कार्य के लिये प्रत्येक छात्र–छात्रा को अपने स्तर पर आवश्यक सामग्री जैसे मौसम के अनुसार कपड़े, बिस्तर, कागज, नोट–बुक, पैन्सिल, रबड़, स्केल, पानी की केतली तथा एक समय के खाने की व्यवस्था कर लेना आवश्यक होता है।

(iii) स्कूल स्तर पर कुछ सहायक सामग्री जैसे – चयनित क्षेत्र का मानचित्र, स्थलाकृतिक पत्रक, कुतुबनुमा, कैमरा, दूरबीन आदि की व्यवस्था करनी चाहिए।

(iv) चयनित क्षेत्र की सूचनायें एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली तैयार करनी चाहिए। चयनित क्षेत्र की

जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए प्रश्नावली की आवश्यक संख्या में प्रतियाँ करवा लेनी चाहिये।

3. **तृतीय चरण**

(i) क्षेत्रीय अध्ययन हेतु रवानगी के नियत समय एवं नियत स्थान पर सभी को अनुशासित ढंग से एकत्रित हो जाना चाहिये। आवागमन के साधन की व्यवस्था हो जाने पर उसमें अपने समान सहित शालीनतापूर्वक अपना स्थान ग्रहण कर लेना चाहिये।

(ii) बस अथवा रेल में सामान रखते समय, यात्रा की अवधि तथा बाद में भी उसकी सुरक्षा का निरन्तर पूरा ध्यान रखना चाहिये।

(iii) चयनित स्थान पर पहुँच कर आपके आवास के लिये निर्धारित स्थान पर अपने आपको व्यवस्थित लेना चाहिए।

(iv) चयनित स्थान पर अध्ययन करने से पहले उस स्थान तथा उसके मार्गों की सामान्य जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(v) सभी छात्र–छात्राओं को कुछ वर्गों में विभाजित करके प्रत्येक वर्ग का कार्य विभाजन कर देना चाहिये। साथ ही ऋतुओं के अनुकूल समय–सारणी निर्धारित कर लेनी चाहिये।

(vi) समय–सारणी के अनुसार सभी वर्गों को अपना–अपना कार्य पूर्णरूप से एवं निष्ठापूर्वक सम्पादित कर लेना चाहिये।

(vii) क्षेत्र में कार्य करते समय व्यावहारिक शालीनता अति आवश्यक होती है। अनुशासनहीनता, दुराचरण, दुर्व्यवहार एवं अनावश्यक विवाद न केवल गम्भीर स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, बल्कि आपके, विद्यालय के एवं गुरूजनों के सामान को भी ठेस पहुँचाते हैं।

(viii) अलग–अलग वर्गों द्वारा किये गये कार्यों को चयनित स्थान छोड़ने से पहले संकलित (Compilation) कर लेना चाहिये।

(ix) संकलित आँकड़ों और सूचनाओं का समेकन (consolidate) करना चाहिये। इस काम को सामूहिक रूप से करना उपयुक्त रहता है।

4. **चतुर्थ चरण**

(i) क्षेत्रीय अध्ययन से लौटने के बाद प्रतिवेदन तैयार करने का कार्य करना होता है। इससे पूर्व संकलित सामग्री का विश्लेषण करना चाहिये जिससे कि उपयुक्त निष्कर्ष तक पहुँचने में आसानी हो।

(ii) सभी निष्कर्ष, समस्याऐ तथा उनके निराकरण के उपाय क्रमवार नोट कर लेने चाहिए।

(iii) विश्लेष्ण के निष्कर्षों को तार्कितकता के साथ प्रतिवेदन में प्रस्तुत किया जाता है। प्रतिवेदन की विषयवस्तु, संक्षिप्त, सार–गर्भित और तर्कसंगत होने चाहिये।

(iv) जहाँ भी उपयुक्त हो सारणी, आरेख, मानचित्र, रेखाचित्र आदि देने चाहिये। ये सभी भूगोल के उपकरण है। आरेखों और मानचित्रों की प्रतिवेदन में उपस्थिति उसे आकर्षक ही नहीं बल्कि और अधिक उपयोगी और सुग्रह बनाती हैं।

(v) अपने प्रतिवेदन को विभिन्न शीषर्कों के अन्तर्गत तैयार करें। अध्ययन के लक्ष्य और चयनित क्षेत्र की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शीर्षक निर्धारित किये जा सकते हैं जैसे – अवस्थिति, उच्चावच, अपवाह, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, मृदा, कृषि, पशु सम्पदा, खनिज संसाधन, उद्योग, परिवहन के साधन, जनसंख्या आदि।

क्षेत्रीय अध्ययन के कार्य को पूर्णता देने के लिये चयनित स्थान का अध्ययन तथा प्रतिवेदन तैयार करने का कार्य निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर किया जाना चाहिये। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रश्नावली का निर्माण भी इन्हीं बिन्दुओं पर आधारित हो।

1. **स्थिति एवं अवस्थिति**

भौगोलिक अध्ययन में किसी भी स्थान की स्थिति एवं अवसिथिति का ज्ञान आवश्यक और प्राथमिक पहलू है। अक्षांश तथा देशान्तर के संदर्भ में स्थिति का निर्धारण किया जाता है। अवस्थिति का निर्धारण देश, प्रदेश तथा निकटवर्ती क्षेत्र के संदर्भ में किया जाता है। इस प्रकार इस शीर्षक के अन्तर्गत निम्न सूचनायें एकत्रित की जाती है –

(i) चयनित स्थान क्षेत्र की अक्षांशीय तथा देशान्तरीय स्थिति एवं विस्तार।

(ii) चयनित क्षेत्र की प्रशासनिक स्थिति, देश, राज्य, जिला, तहसील, खण्ड, पंचायत समिति आदि।

(iii) आस–पास के क्षेत्रों के संदर्भ में अवस्थिति–निकटवर्ती गाँव, कस्बे, शहर, महानगर या राजधानी के संदर्भ में।

(iv) आवागमन के साधनों द्वारा निकटवर्ती क्षेत्रों से दूरी व सम्पर्क की सुविधा।

(v) इन सूचनाओं के आधार पर **मानचित्र में अध्ययन क्षेत्र की स्थिति का निर्धारण** करना चाहिये।

उपरोक्त बिन्दुओं से सम्बन्धित जानकारियाँ स्थलाकृतिक पत्रकों की सहायता से सही व पूर्ण रूप से मिल जाती है। शेष जानकारियाँ स्थानीय मानचित्रों एवं निवासियों से प्राप्त की जा सकती है।

2. उच्चावच

प्रत्येक स्थान के भौगोलिक व्यक्तित्व के निर्धारण में उच्चावच व स्थलाकृतियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस पहलू का जलवायु, अपवाह, वनस्पति, कृषि, आर्थिक विकास व सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण के अतिरिक्त उस स्थान के धरातलीय स्वरूपों का अध्ययन स्थलाकृतिक पत्रक की सहायता से भी किया जा सकता है। पत्रक में दी हुई सूचनाओं की क्षेत्र में वास्तविकताओं से तुलना की जा सकती है। धरातल समतल व मैदानी होने पर कृषि कार्य अधिक विकसित होते हैं। पर्वतीय या ऊबड़–खाबड़ क्षेत्रों में कृषि के विकास की सम्भावना अपेक्षाकृत कम होती है। समतल क्षेत्रों में जल निकास की समस्या हो सकती हैं क्योंकि विकास के लिए ढाल की आवश्यकता होती है। इस प्रकार स्थलाकृतियों के अध्ययन से आप उस स्थान की विशेषताओं तथा समस्याओं से अवगत हो सकते हैं। अपने अध्ययन की प्रक्रिया में उन समस्याओं के निराकरण के उपाय भी ढूँढने के प्रयास करने चाहिये।

3. जल प्रवाह व जल संसाधन

किसी क्षेत्र में धरातलीय स्वरूप, संरचना एवं वर्षा की मात्रा पर जल की उपलब्धि निर्भर करती है। तीव्र ढाल तथा कठोर शैलें होने पर वर्षा की प्रचुरता के बाद वहाँ भूमिगत जल के भण्डार सीमित होने की सम्भावना होती है। क्योंकि कठोर शैलों के कारण उनमें जल प्रवेश नहीं कर पाता, एवं वर्षा का अधिकांश जल बह जाता हैं चयनित क्षेत्र में जल स्त्रोतों का अध्ययन करना भी आवश्यक हैं। ये स्त्रोत झील, तालाब, साधारण कुएँ, नलकूप आदि के रूप में हो सकते हैं। कुओं में जल स्तर से भूमिगत जल स्तर का पता लग सकता है। कुओं में सिंचाई के उपरान्तर जल स्तर की

स्थिति को कृषकों से जानकारी करनी चाहिए। इससे वहाँ भूमिगत जल के भण्डार का पता लगता है। चयनित स्थान पर जलाभाव की समस्या के निवारण हेतु निकटवर्ती जल स्त्रोत की जानकारी प्राप्त कर उसे वहाँ उपलब्ध कराने के सुझाव दे सकते हैं। किसानों के लिए नहरों द्वारा जल उपलब्ध कराने सम्बन्धी सुझाव स्वागत योग्य होते हैं।

4. जलवायु

किसी क्षेत्र के विकास में जलवायु परिस्थितियों का काफी योगदान होता है। इसके अन्तर्गत तापमान, वर्षा आदि के क्षेत्रीय तथा मौसमी वितरण आदि का अध्ययन सम्मिलित है। ये सभी तथ्य कृषि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य पहलुओं जैसे मानव जीवन, क्रियाकलाप, रीति–रिवाज, वेशभूषा, भोजन की आदतें आदि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना चाहिये।

5. प्राकृतिक वनस्पति

धरातलीय स्वरूपों एवं जलवायु परिस्थितियों पर प्राकृतिक वनस्पति की सघनता, विशेषता, प्रकार, गुण आदि निर्भर करते हैं। चयनित क्षेत्र में आप देखे कि वहाँ कि वनस्पति किस प्रकार की हैं तथा वहाँ का मानव जीवन उससे किस प्रकार सम्बन्धित हैं? आधुनिकता की दौड़ में वहाँ वनो की कटाई कितनी हुई है तथा उसका मृदा, जलस्तर, पर्यावरण आदि पहलुओं पर उसका क्या प्रभाव पड़ा है? इस प्रकार की समस्याओं के निवारण हेतु उस क्षेत्र में क्या रचनात्मक कदम उठाये जा सकते हैं, इस सम्बन्ध में आप के सुझाव वहाँ के निवासियों के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे।

6. मृदा

प्रत्येक क्षेत्र में कृषि–सम्पन्नता वहाँ की मिट्टियों की संरचना, रंग, बनावट, उपजाऊपन आदि कारकों पर निर्भर करती है। इसलिये आप चयनित क्षेत्र में जाकर वहाँ की मिट्टियों के बारे में किसानों से जानकारी प्राप्त करें। साथ ही उन किसानों से मिट्टी सम्बन्धी समस्याओं के बारे में भी पूछताछ करें। मृदा प्रदूषण, अनुपजाऊपन, मृदा–क्षरण, मृदा अपरदन आदि समस्याओं की आपको जानकारी मिल सकती है। स्थानीय संदर्भ में इन समस्याओं के निवारण हेतु भूगोलवेत्ता के नाते आप अपने सुझाव देने का प्रयास करें।

7. कृषि

भारत एक कृषि–प्रधान देश है। अतः क्षेत्रीय अध्ययन में इस पहलू से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी एकत्रित करनी चाहिये।

प्रमुख कृषि उपजें, फसलों का क्रम, उत्पादकता, कृषि उपजों का विपणन, आवश्यक बीज व खाद आदि की उपलब्धि महत्वपूर्ण पहलू है। आजकल पंचायत समितियाँ तथा सहकारी समितियाँ किसानों को कई प्रकार की सुविधायें उपलब्ध कराती हैं। इस बारे में भी किसानों की कई समस्यायें हो सकती हैं, जिन्हें आप न केवल अपने प्रतिवेदन में उजागर करे, बल्कि उसके निवारण हेतु सुझाव भी देने चाहिये।

8. पशु सम्पदा

भारत में सामान्यतः कृषि कार्यों के साथ पशु पालन भी किया जाता है। पारम्परिक रूप से भारतीय कृषक के लिये यह एक उपयोगी सहायक व्यवसाय है। पशुओं को कृषि कार्य में जोतना, उनके गोबर की खाद का उपयोग करना, उनसे दूध प्राप्त करना मुख्य उपयोगितायें है। हमारे देश में विश्व में सबसे अधिक पशु सम्पदा है, किन्तु उनकी उत्पादकता विश्व के अन्य देशों की तुलना में बहुत कम है। आप चयनित क्षेत्र में इन पहलुओं के अतिरिक्त वहाँ पाये जाने वाले पशुओं के प्रकार, संख्या, स्वास्थ्य, नस्ल, उत्पादकता, उपचार की सुविधा, सर्वेक्षित क्षेत्र से पशु औषाधालय की दूरी आदि पहलुओं की जानकारी एवं सम्बन्धित समस्याओं का विवरण एकत्रित करें। इन्हें अपने प्रतिवेदन में सम्मिलित करते हुए समस्याओं के निवारण के उपाय भी सुझावें।

9. खनिज सम्पदा

अनेक क्षेत्रों में खनिज भण्डार उपलब्ध होते हैं तथा खनन कार्य किये जाते हैं। उपलब्ध खनिज भण्डार, स्थानीय खपत, निर्यात, खनन से सम्बन्धित समस्याएँ आदि शोध के विषय है। इनसे सम्बन्धि आँकड़े व सूचनाएँ एकत्रित करना चाहिये।

10. अन्य व्यवसाय

अध्ययन क्षेत्र में कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय भी हो सकते हैं। ग्रामीण परिवेश में सामान्यतः कुटीर उद्योग प्रचलित होते हैं। वहाँ के निवासियों द्वारा अपने जीविकोपार्जन हेतु जो भी व्यवसाय किये जाते हो, उनका विवरण अपनी रिर्पोट में सम्मिलित करना चाहिये।

11. आवागमन के साधन

किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में आवागमन के साधनों का बहुत बड़ा योगदान होता है। इनके द्वारा आवश्यक माल को मंगाने, अतिरिक्त उत्पादन को बाहर भेजने एवं अपने क्षेत्र में नवाचारों (innovations) के आने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होता है। आप सर्वेक्षित क्षेत्र में आवागमन के साधनों, उनकी बारम्बरता

(frequencey), उनके द्वारा दूरस्थ क्षेत्रों से सम्बन्ध आदि के विषय में जानकारी एकत्रित करें।

12. जनसंख्या

किसी भी स्थान के भौगोलिक व्यक्तित्व के निर्धारण में वहाँ की जनसंख्या का रचनात्मक योगदान रहता है। उस क्षेत्र की कुल जनसंख्या तथा वहाँ उपलब्ध संसाधनों का अनुपात सामाजिक समरसता को प्रभावित करता है। उस क्षेत्र के विकास में कार्यशील जनसंख्या का योगदान रहता है। साक्षरता का अनुपात वहाँ के लोगों में जागरूकता का परिचायक होता है। लिंग अनुपात वहाँ की व्यावसायिक संरचना को प्रभावित करता है। अतः इस पहलू से सम्बन्धित आँकड़ें एकत्रित करने चाहिये।

13. ग्रामीण विकास की नवीन योजनाएँ

राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर विशेष ध्यान दे रही है। इस उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्रों में कई नई योजनाएँ समय–समय पर लागू की जाती हैं किन्तु लोगों को इनकी पूर्ण जानकारी न होने से इन योजनाओं का लाभ आम लोगों एव गरीब किसानों तक नहीं पहुँच पाता। अतः इन योजनाओं को सफल बनाने के लिये इन योजनाओं में सक्रिय सहभागिता हो। आप प्रश्नावली द्वारा इस विषय में लोगों से यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि ग्रामीण विकास की नवीन योजनाओं में उनकी सहभागिता कितनी है।

उपरोक्त पहलुओं के अतिरिक्त पाठ्यक्रम में निर्देशित किसी एक समस्या के विस्तृत अध्ययन को क्षेत्रीय सर्वेक्षण में सम्मिलित करना चाहिये। इसके विस्तृत अध्ययन के लिये एक व्यापक प्रश्नावली तैयार करनी चाहिए। प्रश्नावली के माध्यम से उक्त समस्या से सम्बन्धित गहन जानकारीयाँ उपलब्ध हो जाती है। इन जानकारियों का भी विश्लेषण करके उपयुक्त शीर्षकों के अन्तर्गत वर्णन तथा आँकड़ों का उपयुक्त सारणीयन, आरेखन एवं मानचित्रण करना चाहिये। इस प्रकार सभी पहलुओं से सम्बन्धित सूचनाओं का विश्लेषण करके व्यवस्थित प्रतिवेदन तैयार करना चाहिये। यदि निष्ठापूर्वक कार्य किया गया हो तो यह प्रतिवेदन नियोजकों, स्थानीय प्रशासकों व सरकार के लिए एक उपयोगी प्रलेख/दस्तावेज सिद्ध हो सकता है। वास्तव में क्षेत्रीय सर्वेक्षण का उद्देश्य यही होती है। अतः उक्त कार्य को निष्ठापूर्वक करके इस उद्देश्य को सार्थक बनाना चाहिये।

नोट :–

भूगोल शिक्षक उपयुक्त विषय एवं क्षेत्र का चुनाव कर क्षेत्रीय सर्वेक्षण करायें। इसमें प्रत्येक विद्यार्थी का भाग लेना अनिवार्य है। कक्षा के कुल विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर चार–पाँच विद्यार्थियों का समूह बना कर उन्हें प्रश्नावली के आधार पर प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने को कहे। सामान्य सूचनाऐं सामूहिक रूप से एकत्र करे। क्षेत्र सर्वेक्षण पूर्ण होने पर इसका प्रतिवेदन तैयार करायें जो कम से कम 10 पृष्ठों का होना चाहिये, इस प्रतिवेदन का परीक्षा के समय मूल्यांकन किया जाने का प्रावधान है।

अभ्यास

1. क्षेत्रीय अध्ययन का आशय स्पष्ट करते हुए इसकी आवश्यकता एवं महत्व का विवेचन कीजिए।

अभ्यास

2. क्षेत्रीय सर्वेक्षण के स्वरूप को चार्ट के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

अभ्यास

3. क्षेत्रीय सर्वेक्षण के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

अभ्यास

4. क्षेत्रीय सर्वेक्षण हेतु अध्ययन क्षेत्र का चुनाव किस प्रकार किया जाना चाहिये? स्पष्ट करें।

□□□